

६० नवग्रहस्तोत्र द्वादशराशि वर्णन

म्यहं॥ ३ ॥ प्रियंगु करिकाश्या मरुयेणा प्रतियं बुधं
॥ सौम्यं सौम्यगुणो येन नमामि शशिनं सुते॥ ४ ॥ दे
वाना च अषिणां वगुरुं कां वनसनिभं॥ युक्ता मूर्तिभिः
लोके वपुणा ममि बहस्यनि॥ ५ ॥ हिमकुंदमृगाशा
मंदे लोनायरमंगुरुं॥ सर्वशास्त्रयवकारं भार्गवं यु

णामामिहं॥ ६ ॥ नीलाजं नतिभंदेवरविद्युन्महा
शुक्रं॥ द्वायायां गर्भसंभूतं वदेभक्तभनैश्वरं॥ ७ ॥
बुधकायं महादियं वतुदै न्ययमर्दनं॥ सिंहिका गर्भ
संभूतः ताराद्वयणामिहं॥ ८ ॥ यलातधुमसंका
सं ताराग्रहनमस्तुते॥ ९ ॥ खेतम्वेतां यरधरं श्वेत

वन्दनमुषितं॥सर्विर्यसर्वकालीनंजन्मदेवंनमोभुते
॥ १० ॥आसेनोक्तमितिस्तोत्रंयःपरिच्छतिमानवाः॥
दिवावायदिवा रात्रौगुरुपीडास्तनूरुयनति॥ ११ ॥
इतिनवग्रहस्तोत्रं समाप्तं॥

ॐ नमःश्रीकामदेवाय॥ ॥मूढप्रमादः
सुमययावमाहुनःश्वश्रयाप्रसादनंरवहिनकं
गवश्रःसूदत्रोवकामखकाययागःश्वश्रन
यत्तःश्वश्रनःपीयत्रमश्ववःकामदेवनमस्का
यानावःशुक्ल॥श्वनवकाशमश्वःकाथाया

खरुवनः शरवानः खयन्कृयानावदयका॥ नाः
नाविविह नंगः क्षत्रयाय विधिरवा॥ ॥ ॥ ॥

सामुयाखः संसात्रदयकया नः सुखकायत्रयय
कया नरवा॥ ॥ ॥ ॥

द्विस्तानगः क्षत्रमया कलाः थकक कामदकानं

अथरुनसांनाः थकनं सुखला नः शंका नपुत्रः
दयकावः ममुठ नावकृयायः कायमदनातः
थविनिापीयमानरुतः गथयत्रिमानरुतः
रुतनभादिनं वसं नत्रमिय

ॐ नमः श्री महादेवाय ॥ मङ्गा श्री ॥ मङ्गा श्रीला
कथ्यते जिनक सयागुरुः वरु सत्वः मे श्रीय वरुणाभिः म
हासुखकायः उदधनायाकः रुद्रपासः वेलाय न आदिः पंचव
धप्रि लाक नं नमस्काय यादिकाय ॥ इह तद का रु का व वि का
कः सर्वार्थ सिद्धि आय नथा ग नः निर्मा गुरुः रुषया दं म ग स

इयः वाचि सत्व याथा ॥ १ ॥ हृषीकेशः हृषया वरु ग न कानः
आनन्द सुखः खाल ह का ल वरुः अकाय क व र्धनः यथिवि स
मङ्क क पु व न्द अरु का ल द किः अदाय मु कि रे ल वः महा बुद्धि
गुरुः इह रूयं क स विग्रह वृष द क वाचि विरु कानं प्रसा न या क
वरुणा ल स दि न नं द वि भ्रा ति ग न ना यो वि का कः पितृ आदि

रागदकाङ्ककावथधिगुवागयाण्डनागयाकःकाटयाङ्कः
नंधागुवात्माःमकाखभायःकुन्नाङ्कःकवगाङ्कःमरिन्ना
काखनिबन्धनस्यवृषःधाधिक्कस्यवृषयाकःम
नामधाधिसत्तनःधाधिगुवृषवृषनंदिधंश
वृषुःगभरुमिर्यमातिःजन्मयागगाद

ॐ नमः श्रीगुरुवत्सलाय ॥ ॥ यथा नडा न्यायान् ॥
 १ धनवारु ॥ २ सक्तकाय साधवधरुयि ॥ ३ वागरुयि ॥ ४
 लक्ष्मी लारु ॥ ५ ॥ ६ कवदरुयु ॥ ७ नयवक्तु कमानवक्तु
 कदयु ॥ ८ गक्तनंया लक्तयु ॥ ९ गवधंरुयि ॥ १० रुमि
 बालादयि ॥ ११ गदयि ॥ १२ यातसन्दह ॥ १३ सर्वका

र्यसिद्धरुयि॥ वरुदेसिः अमा वासिः यद्रिः थुलिग
नं उ न्यमखडा॥ ॥ ॐ न्दधी॥ गनिग्रववावखुद्रु
पवम धसिनया उ न्य॥ वरुस्यनियमखुद्रु दमि सडा
रुमा वसाः यिक न नया उ न्य॥ वधवाव अगवाव य
ग्रिमडा न वाव नया उ न्य॥ आदिरु वाव गुद्रु वाव

उरुवम डा न मा वसा॥ इदमाना उ न्य खडा॥ थुनिगुद्रु
या जा न रुयि॥ वयामुयु व नमगि व उ र्वथरुवसिय
क॥ मव॥ य॥ मि॥ अ॥ क॥ मि॥ द॥ क॥ ने॥ नुयि॥ य
॥ ध॥ वा॥ म॥ क॥ उ॥ मी॥ ॐ॥ म॥ व॥ ख॥ य॥ आ॥ डा॥ म॥
खि॥ वा॥ ख॥ मि॥ य॥ व॥ रु॥ मि॥ अ॥ वि॥ वि॥ उ॥ रु॥ व॥ स॥ डा॥ न॥ वा

यादिशिमगमिताः सयः॥यनवसुः अश्वपुत्रि॥स
यः पूर्वरागुपयु॥विष्णुविभाखादधी॥उरुहोमृशउ
रुखादःसा॥क्षयेननुवादःयसा॥अवतःपूर्वरागुः
माकु॥दरुःस्वामिःभस॥अश्विनीःगमलिषःसल॥
धनयःपूर्वरुद्रःसिंद॥रुक्मीयवमिकिसि॥थुमि

सत्यरायविश्वधलयमाव॥ ॥सत्यराय॥
साडाःधुडा॥ किसिडासिंदडा॥ ॥शिवडाववा
डा॥ ॥नगवयाःसयडा॥ ॥माकनरुयिडा॥ ॥
रुमिदुडा॥ ॥थमसत्यविवाददानकमनडा॥
थडाकुलससनपीमि॥ ॥दवडामनुषडा॥

मध्वस॥ ॥दवडामनूषाडकवरुहय॥ ॥मनू
 षाडामरुसडामरुहय॥ थनडानविशध॥ ॥व
 रु॥कं॥कं॥मःमिःसिःमी॥कः॥ध॥विःम॥थनयावावा
 सामिडकानःकुकर्मसंरिना॥मीपूवममादिनाडा॥
 मःसिः॥मःकं॥गुःमी॥कः॥कं॥धः॥वष॥विःमि॥थ

कषवायावावाकसागप्रखकानःकुकर्मसंमरिड
 मीपूवममा॥ ॥पूवडानमरुडा॥थिने॥

द्विनिया	सम
वडथि	अनिश्वर
नडामि	नरुगु
दगमि	गुवध
रुफमि	रुष

दक्षिण्डानमर्गडा॥	यागिमडाइमखडा॥
मिथि॥ वाज॥	मिथि॥ वाज॥
वकुदसि॥ वदख	दादसि॥ अंगवाज॥
अमावासि॥ मिथि	असमि॥ वृधवाज॥
नकूकू॥ ग॥	पूकि॥
उरु॥	नकूगु॥
अमिनि॥	आदिशी
	पूषा॥

उरुवडा नामर्गडा॥
 मिथि॥ नकूगु॥
 पाद॥ हकू
 मयादसि॥